श्री राजराजेश्वरी महाराज्ञा

श्री क्षीर भवानी मन्दिर

पटपटगंज, दिल्ली



प्रकाशक

महन्त श्री–रामशरणगिरि महाराज

सिद्धेश्वर महादेव साईंराम मन्दिर मठ

संन्यास आश्रम चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

सिद्धेश्वर मन्दिर मार्ग (गा गीपुर)

निकट हसन पुर बस डिपो, आई.पी. एक्सटेंशन (पटपटगंज)

दिल्ली 110092

फोन न. 9313786246

ॐ नमो नारायण
जय सांई राम



कौन सा काज कठिन जग माही।
जो होए नहीं तात तुम पाहीं।।

श्री राजराजेश्वरी महाराज्ञा

श्री क्षीर भवानी मन्दिर

पटपटगंज, दिल्ली



सिद्धेश्वर महादेव साईंराम मन्दिर मठ

संन्यास आश्रम चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालि

सिद्धेश्वर मन्दिर मार्ग (गाज़ीपुर)
निकट हसन पुर बस डिपो, आई.पी. एक्सटेंशन (पटपटगंज)
दिल्ली 110092
फोन न. 9313786246

Dr. Karan Singh
Member of Parliament
(Rajya Sabha)



3, Nyaya Marg
Chanakyapuri
New Delhi - 110 021

प्राक्कथन



कश्मीर-वादी हजारों वर्षों से धर्म का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रही है। आरंभ में वैदिक संस्कृति इन्हीं सुन्दर पहाड़ों और झीलों में पनपी होगी। तत्पश्चात् बौद्ध मत का आगमन हुआ, और कनिष्क के समय एक विशाल अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध मत सम्मेलन श्रीनगर के नजदीक हारवन में संपन्न हुआ और यहीं से यह धर्म लद्दाख होते हुए तिब्बत, चीन, कोरिया, और जापान पहुँचा। मध्यकालीन युग में आदि शंकराचार्य कश्मीर आये और उन्होंने यहां वेदांत का प्रचार किया और भगवान शिव के अद्भुत मंदिर की स्थाना की। उसके पश्चात् कश्मीर शैव सिद्धांत पनपा, जिसने भारतीय दर्शन को अद्भुत योगदान दिया और जिसमें आचार्य अभिनव गुप्त जैसे महान चिंतक का उदय हुआ। मां ललेश्वरी के 'वाख' आज तक कश्मीर में गाये जाते हैं। 14वीं शताब्दी में शाह हमदान और शेख नूरदीन नूरानी के साथ सूफी इस्लाम कश्मीर में फैला उसके बाद मुगलों का, सिक्खों का, फिर डोगरा खानदान का राज रहा जिनके दौरान मस्जिदों, गुरुदारों, मंदिरों, की स्थापना हुई। इस प्रकार कश्मीर अनेक धर्मों का अद्भुत संगम है।

मानव द्वारा रचित धार्मिक स्थानों के अतिरिक्त यहां प्राकृतिक स्थान भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। जिनमें श्री अमरनाथ जी की पवित्र गुफा और माता खीर भवानी का पवित्र कुंड भी है। खीर भवानी कश्मीरी पंडितों के लिये सबसे पवित्र और महत्वपूर्ण तीर्थ माना जाता है। इस प्राकृतिक कुंड के मध्य में संगमर्मर के मंदिर में शिव और शक्ति की मूत्तियां स्थापित हैं। इस मंदिर को हमारे पूर्वज महाराज़ा प्रताप सिंह जी ने 19वीं शताब्दी में निर्मित किया। इस कुंड का एक अद्भुत करिश्मा है कि इसका रंग समय-समय पर बदलता रहा है। माना जाता है कि जब इसका शुभ रंग हो जैसे गुलाबी, हल्का नीला अथवा हरा हो तो इसे अच्छा शगुन माना जाता है और यदि गहरा काला रंग उभरे तो इसे अपशकुन माना जाता है। मैंने स्वयं कई बार इसे देखा है। 1947 में भयंकर घटनाओं से कुछ महीने पहले मैंने वहां के दर्शन किये तो इसका रंग काला हो चुका था। कबाईली हमले के बाद कई महीने तक यह पवित्र स्थान उनके कब्जे में रहा। भगवती की कृपा से इसको कोई हानि नहीं पहुँची। इधर भारत

सरकार और धर्मार्थ ट्रस्ट ने मिलकर सारे भवनों और धर्मशालाओं का पुर्ननिर्माण किया जिससे इस द्वीप की और कुंड की सुंदरता भगवती की कृपा से नये रूप में उभरकर सामने आई। ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी को खीर भवानी का मेला होता है। इस अवसर पर हजारों, श्रद्धालु भारतवर्ष के हर कोने से और विदेश से भी माता के दर्शन करने आते हैं, एवं उनका आशीर्वाद प्राप्त करते है।

इस पुस्तिका में प्रोमिला धर ने खीरभवानी मंदिर के संबंध में कुछ सामग्री प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मुझे विश्वास है कि यह सामग्री श्रद्धालुओं के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

ॐ नमःशिवाय।

कर्ण सिंह

(कर्ण सिंह)

निवेदन

जगदम्बा राजराजेश्वरी महाराज्ञा जिनका लोकप्रिय नाम क्षीर भवानी है कश्मीर के तुलमुल ग्राम में अवस्थित हैं। बाबा अमर नाथ के समान संसार भर से श्रद्धालु इस तीर्थ स्थल की भी यात्रा करने आते हैं। ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन हर साल यहां बड़ा मेला लगता है। वर्ष 1990 में जब पाक प्रेरित जिहादियों (आतंकियों) ने कश्मीर में उत्पात मचाया और अनेक देशभक्तों को शहीद कर दिया तो लगभग सारे शान्ति प्रिय कश्मीरी भाषी हिन्दू अपनी प्यारी जन्मभूमि कश्मीर घाटी से पलायन कर गए। देश के विभिन्न भागों में बिखरे इन विस्थापित बन्धुओं को अनेक कष्टों से जूझते हुए अपने जन्म स्थान से जुड़े पावन तीर्थो की याद सदा आती है। अगस्त 2008 मास में मुझे अपने परिवार के साथ कश्मीर जाने की हार्दिक इच्छा हुई। परिणाम स्वरूप अपने पड़ौस में स्थित सिद्धेश्र महादेव मन्दिर के महन्त स्वामी रामशरण गिरि जी महाराज के साथ हम वहां गए। मैं तुलमुल गांव में स्थित माता क्षीर भवानी के अद्‌भुत मन्दिर के दर्शन कर भाव-विभोर हो गई। मेरी मनोदशा को देखकर मेरे पति श्री कुलदीप धर ने दिल्ली में क्षरीर भवानी का ऐसा ही मन्दिर बनाने का संकल्प किया। बाबा ने इस पावन संकल्प को पूरा करने के लिए सिद्धेश्वर महादेव परिसर में मां भवानी का मन्दिर निर्मित करने का आशीर्वाद सहित सक्रिय सहयोग प्रदान किया। आप देख रहे हैं आज इतने अल्प समय में हमारा यह संकल्प पूरा हो गया है।

राजराजेश्वरी महाराज्ञा के महात्म्य और इस मन्दिर के संबंध में विवरण तथा देवी मां की लोकप्रिय स्तुतियों का संकलन-संपादन हमारे अभिभावक आदरणीय प्रोफेसर चमन लाल सप्रू ने किया। जो इस पुस्तिका में आपके सामने प्रस्तुत है।

दिल्ली स्थित इस क्षीर भवानी मन्दिर परिसर को और अधिक शोभायमान करने तथा यात्रियों की सुविधाओं के लिए विस्तार करने की आवश्यकता है। हमारा विश्वास है महाराज्ञा क्षीर भवानी की अनुकम्पा से श्रद्धालु जन हमारे साथ जुड़कर पूरा सहयोग करेंगे।

जगदम्बा राजेश्वरी महाराज्ञा की सेवा में समर्पित

माघ शुक्ल अष्टमी,
सप्तर्षि संवत् 5085
23 जनवरी 2010

प्रोमिला धर
मोबाईल नं. 9958810531

तुलमुल गाँव में स्थित

अद्वितीय शक्तिपीठ क्षीर भवानी

–प्रो. चमनलाल सप्रू

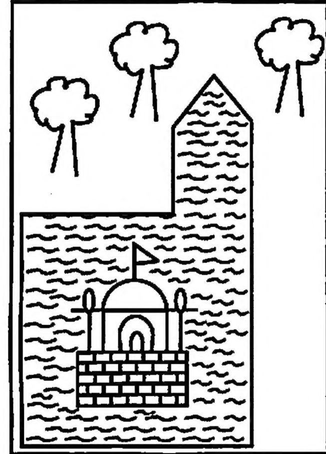
कश्मीर घाटी में विश्व विख्यात तीर्थस्थल अमरनाथ जी के समान क्षीर भवानी का तीर्थस्थल भी विश्व प्रसिद्ध है। यूं तो कश्मीर मंडल में अनेक शक्ति पीठ हैं किन्तु क्षीर भवानी का स्थान सर्वोपरि है। प्रत्येक मास की शुक्लाष्टमी को देवी भक्त उपवास रखते हैं और माता क्षीर भवानी की उपासना करते हैं, किन्तु ज्येष्ठ मास की शुक्लाष्टमी को इस तीर्थराज पर वार्षिक मेला लगता है।

भृगेश संहिता नामक पौराणिक ग्रंथ में क्षीर भवानी के संबंध में महाराज्ञा प्रादुर्भाव अध्याय के अन्तर्गत उक्त तीर्थस्थान का सविस्तार उल्लेख मिलता है। क्षीर भवानी का तीर्थ श्रीनगर शहर से लगभग 24 किलोमीटर की दूरी पर है। श्री महाराज्ञा क्षीर भवानी का मंदिर तुलमुल नामक गाँव में सिंधु घाटी के रम्य वातावरण में अनेक चिनारों के मध्य अवस्थित है। क्षीर भवानी नाम से सम्बोधित महाराज्ञा के तीर्थ स्थन को जाने वाला मार्ग आध्यात्मिक संकेतों द्वारा मां के दर्शन करने से पूर्व उच्च धरातल पर पहुँचाता है। श्रीनगर से आते समय पहले विचार नाग (विचार का स्रोत) नामक मंदिर आता है। उसके बाद आंचार (आचार) झील आता है। तदनन्तर त्यंगल बाल (अंगारों की पहाड़ी) कावुज नार (श्मशानाग्नि) एवं अमर हेर (अमरता की सीढ़ी) तीनों वैराग्य और विवेक के प्रतीत नामक स्थान आते हैं। इन पड़ावों से गुज़रते हए परन बून्य (शरणागति-चिनार) नामक स्थान पर देवी मां को पूर्ण रूप से आत्मसमर्पण करके महाराज्ञा क्षीर भवानी के क्षेत्र तुलमुल ग्राम में प्रवेश होता है। जगज्जनी के पावन दर्शन प्राप्त करके आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति होती है।

भृगेश संहिता में वर्णित राज्ञा प्रादुर्भाव अध्याय के अनुसार लंकाधीश रावण असीम शक्तियों की प्राप्ति हेतु महाराज्ञा की उपासना करता था। रावण की कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर महाराज्ञा ने उसे अनेक वरदान दिए। उसके पश्चात रावण भोगविलास का जीवन बिताने लगा। देवी सीता का अपहरण करके श्रीरामचन्द्र से युद्ध की तैयारी करने लगा। रावण के दुर्व्यवहार को देखकर महाराज्ञा ने हुनमान जी से कहा–'मुझे 360 नागों सहित सतीसर (कश्मीर) ले चलो। हनुमान जी ने ऐसा ही किया और जगदम्बा की आज्ञानुसार तुलमुल गांव में महाराज्ञा की प्रतिष्ठा की। तब से यहां पर जगज्जनी की वैष्णवी पद्धति से पूजा अर्चना 'व्यन' पुष्प-जो स्थानीय खेतों में

स्वयमेव उपजता है तथा दूध, मिष्ठान एवं क्षीर से होती है। राजतरंगिनी में तुलमूल गांव के ब्राह्मणों को अद्भुत आध्यात्मिक शक्तियों से सम्पन्न बताया गया है।

इस्लामी शासन में काफी समय तक जल प्लावन के कारण यह तीर्थस्थल जल मग्न रहा। इन पंक्तियों के लेखक के कुल गुरुओं के पूर्वज **श्रीकृष्ण पंडित** नाम वे सिद्ध महापुरुष एवं भगवती महाराज्ञा के अनन्य भक्त को स्वप्न में आदेश प्राप्त हुआ कि इस तीर्थस्थल को रेखांकित करने हेतु एक नाग देवता नौका के आगे-आगे तैरकर तुम्हारा मार्ग दर्शन करेगा और इस प्रकार इस स्थल की पुनः प्रतिष्ठा करो। कृष्ण पंडित ने ऐसा ही किया। देवी मां की अर्चना हेतु लाई हुई दूध की मटकी में स्वतः छिद्र हुआ और उसमें से निकली दुग्ध धारा से शारदा लिपि में लिखित ॐ के आकार स्वरूप क्षेत्र के चारों ओर मिट्टी से भरकर बीच में एक अद्भुत कुण्ड ने दिव्य रूप धारण किया। शारदा लिपि में लिखित ॐकार के अतिरिक्त इस कुण्ड का आकार जपमाला की थैली के रूप में भी दिखाई देता है। पावन कुण्ड के बीच में जलमग्न जगज्जननी की प्राचीन मूर्ति और उनके स्वामी भूतेश्वर नाथ के लिंग को निकालकर एक बेदी पर स्थापित किया गया। डोगरा महाराजाओं ने यहां पर एक संगमरमर का सुंदर मंदिर बनवाया और उनके द्वारा संस्थापित धर्मार्थ ट्रस्ट के आधीन इसकी देखभाल हो रही है।



अपने कश्मीर प्रवास के समय स्वामी विवेकानन्द ने भी इस तीर्थ स्थान की यात्रा की। 30 सितंबर से लेकर 6 अक्टूबर 1898 तक यहां तपस्या एकान्त में की। एक स्थानीय ब्राह्मण की कन्या की प्रतिदिन कुमारी पूजा की तथा एक मन क्षीर का भोग चढ़ाते रहे। यहां पर अपने आध्यात्मिक अनुभवों का जो वर्णन उन्होंने किया उसे उनकी प्रथम विदेशी शिष्या मिस मार्ग्रेट एलिज़ाबेथ नोबल (बाद में भगिनी निवेदिता) ने अपने संस्मरणों में लिखा है। इस अद्भुत तीर्थस्थल के आध्यात्मिक प्रभाव का स्पष्ट उदाहरण है कुण्ड के जल का रंग बदलना। किसी प्रकार की कालिमा से युक्त रंग का संकेत भारी विपदा में देखा गया हैं 1947 के समय पाकिस्तानी आक्रमण तथा 1990 के समय कश्मीरी भाषी हिन्दुओं के निष्कासन के समय भी कालिंमायुक्त रंग देखा गया था। दोनों समय इस्लामी जिहादियों ने मंदिर परिसर में प्रवेश करने का दु:साहस नहीं किया। स्थानीय मुस्लिमों (जो इस तीर्थस्थल में अगाध श्रद्धा रखते हैं) ने भी अनुनय-विनय द्वारा उनके दु:साहस को विफल कर दिया। आसपास के अनेक

चिनारों पर चील अथवा कौए का घोंसला नहीं मिलता है। यह है इस तीर्थराज की पावनता का प्रत्यक्ष प्रमाण।

आतंकवाद ग्रस्त कश्मीर घाटी में यद्यपि अनेक मंदिर वीरान हो गए। इस पावन तीर्थस्थल पर निर्बाध गति से श्रद्धालु भारी संख्या में आते रहते हैं। श्रीकृष्ण पंडित को देवी के कुण्ड की खोज करने पर चिनार के एक पत्ते पर अंकित देवी का निमर्नलिखित श्लोक सामने आकर गिरा:-

याद्वादशार्क परिमण्डित मूर्त्तिरेका सिंहासनस्थितिमतींह्युरगैवृत्तां च।
देवीमनक्षगतिमीश्वरतां प्रपन्नां ताम नौमि भर्ग वपुर्षीं परमार्थ राज्ञीम्॥

(जो महाराज्ञी बारह सूर्यों की समलंकृत एक मात्र स्वरूप हैं, जो सिंहासन पर विराजमान है और जो नागराजों से आवृत्त है, जो सामान्य जनों की इन्द्रिय वृत्तियों से परे है, जो ऐश्वर्यों की साक्षात मूर्ति है उस अष्ट परमार्थ पद को प्रदान करने वाली प्रकाश स्वरूप महाराज्ञी को मैं नमन करता हूँ।) उपर्युत श्लोक के एक एक अक्षर के आधार पर कृष्ण पंडित ने महाराज्ञा स्तोत्रम की रचना की।

संपर्क: 9871481177

□□□

धनअभाव में, आलस से भी, ज्ञान न विधि का होने से।
तव पदसेवा चूक हो गई, पूजनशक्ति न होने से॥
क्षमायोग्य हे सर्वोद्धारिणि! शिवे! अम्ब! सब कुछ ही है।
हो उत्पन्न कुपुत्र कहीं भी होती, नहीं कुमाता है॥

महाराज्ञी क्षीरभवानी की महिमा

–डॉ. बलदेवानन्द सागर
(संस्कृत समाचार विभाग, आकाश वाणी)

'भृङ्गीश-संहिता'–नामक ग्रन्थ में, प्रमुख रूप से हमारे कश्मीर के तीर्थस्थानों की महिमा और कथाओं का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

इस संहिता में मार्तण्डमाहात्म्य के नवम पटल में कश्मीर की महिमा में कहा गया यह श्लोक प्राप्त होता है–

पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानि काश्मीरमण्डले।
काश्मीरे यानि तीर्थानि तानि हरमुखे गिरौ।।

भृङ्गीश-संहिता, मार्तण्डमहाहात्म्य, पटल-9, श्लोक-8

अर्थात् कश्मीर क्षेत्र अत्यंत अद्भुत पुण्य-धाम है। पृथ्वी में जितने भी तीर्थ-स्थल वर्तमान हैं, वे सभी कश्मीर क्षेत्र में सिित है और काश्मीर के सभी तीर्थस्थल 'हरमुख-गिरि' में भी वर्तमान हैं।

इस श्लोक में 'तानि हरमुखे गिरौ' की जगह पर 'तानि वैतस्तिके जले'- ऐसा पाठ भी मिलता है अर्थात् कश्मीर के सभी तीर्थस्थल वितस्ता-नदी के जल में भी विद्यमान हैं।

भङ्गीश-संहिताकार का कथन अत्यंत मार्मिक है क्योंकि तीर्थस्थानों एवं तीर्थ-देवों का ज्ञान और उनके रहस्य बहुत ही सूक्ष्म होते है जिनको समझने और साक्षात् करने के लिए देवकृपा, गुरुकृपा और खुद की भी साधना बहुत जरूरी है।

खैर, इस भृङ्गीश-संहिता में भगवती महाराज्ञी क्षीरभवानी के प्रादुर्भाव का रोमांचकारी उल्लेख प्राप्त होता है। महाराज्ञी के प्रसाद से यानि अनुकम्पा से श्रीराम, रावण का वध करके विभीषण को लंका का राज्य दे देते हैं- इस तथ्य का उल्लेख भी प्राप्त होता है।

श्री संहिता का प्रथम अध्याय है- 'श्रीराज्ञीप्रादुर्भावः'। इस के प्रथम पटल में 'तुलमुल' के वर्णन में कहा गया है–

तुलवत्तुल्यतान्यत्र स्थानान्यन्यानि सुन्दरि।
लघुभूतानि मूल्येन तस्मात्तु तुलमूल्यकम्।।

भङ्गीश-संहिता, श्रीराज्ञीप्रदादुर्भाव:, पटल-9, श्लोक'-8

अर्थात् हे सुन्दरि! हे भैरवि!! दूसरे स्थानों की तुलना में यह स्थल तूलवत् यानि कापस के समान हल्का होने से, मूल्य में भी अत्यन्त हल्का है अत: इसको तुलमूल या तूलमूल्यक कहते है।

अत्र स्थिताभूच्छान्ता सा क्षीर-खण्डाज्य भोजना।
सात्त्विका सत्यरूपा सा देवी पञ्चदशाक्षरी।

अर्थात् 'श्रीश्यामा' नाम से प्रतिष्ठित भगवती ने जब रावण को कहा कि हे राक्षसाधम, अब मैं सतीसर नामक कश्मीर में जाकर वैष्णव-व्रत-धारिणी बनूंगी। तो भगवान् श्रीराम के आदेश से श्रीहनुमान महाराज्ञी श्रीश्यामा को 'तूलमूल' नामक स्थल में लाकर रखते हैं। यहां भगवती शांत स्वरूप के साथ सुस्थिर होती है और क्षीर यानि दूध का आहार करती हुई परम-सात्त्विक-स्वरूप के प्रभाव से सत्य-रूपान्वित होती हुई पन्द्रह अक्षरों के प्रभाव को प्राप्त करती है। उपर्युक्त-कथन के लिए निम्नांकित दोनों श्लोक प्रमाणरूप में प्रस्तुत हैं-

उवाच जगतां धात्री धिक् त्वां हे राक्षसाधम।
अहं वज्रामि सद्देशे हिमाचले वरे शुभे।।
सतीसरसि काशमीरे वैष्णव-व्रत-धारिणि।
हनुमंत्रं ततः प्राह श्रीरामो मनुजावृतिः।।

पराम्बा भगवती सीता की स्तुति करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी 'श्रीरामचरित-मानस' के आरंभिक मंगलाचरण में कहते है-

उद्भव-स्थिति-संहार-कारिणी क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभम्।।

श्रीरामचरितमानस, बालकांड-5

अर्थात् परमेश्वर स्वरूप श्रीराम की परमप्रिया श्रीसीता भगवती को प्रणाम करता हूँ। भगवती सीता, श्रीश्यामा-स्वरूपा है और सभी प्राणियों का कल्याण करती हैं। भगवती श्रीसीता सभी का क्लेश(कष्ट) दूर करती हैं ये पराम्बा सृष्टि के निर्माण, संरक्षण और संहार का कारण है।

इसी भाव को और अधिक विशद-रूप देते हुए श्रीभगवत्पाद भगवान् भष्यकार आदिशंकराचार्य अपने 'कनकधारा-स्तोत्र' में कहते हैं-

गीर्देवतेति गरुड-ध्वज-सुन्दरीति,
शाकम्भरीति शशि खेखर वल्लभेति।
तस्यै नमस्त्रिभुवनैक-गुरोस्तरुण्यै।
सृष्टि-स्थिति केलिषु संस्थितायै

कनकधारा-स्तोत्रम्-10

यानि-पराम्बा-भगवती गीर्देवता हैं अर्थात् साक्षात् सरस्वती है। गरुडध्वज-सुन्दरी अर्थात् महालक्ष्मी स्वरूपा है। शाकम्भरी का रूप धारण करके भगवती, प्राणियों के भरण-पोषण का दायित्व पूरा करती है और भगवती-पराम्बा शशिशेखर-वल्लभा है अर्थात् देवाधिदेव-महादेव की परम-प्रिया भगवती-क्षीर भवानी-रूपा भी हैं क्योंकि भगवती- श्रीविद्या, राजराजेश्वरी-त्रिपुर सुन्दरी, अपनी लीला से विविध भाव एवं स्वरूप के आधार पर विभिन्न-रूप और नाम धारण करके इस सृष्टि का निर्माण-संरक्षण-प्रलय कार्य करती है। इस तीन लोकों के एक गुरु-साक्षात् परमेश्वर की परम तरुणी पराम्बा को मैं नमस्कार करता हूँ।

यही भाव भृङ्गीश-संहिताकार ने अपने 'श्रीराज्ञीप्रादुर्भावः' के दोनों पटलों में व्यक्त करके महाराज्ञी क्षीर भवानी की परमोत्कृष्ट महिमा का बखान किया है। मार्कण्डेय-पुराण में संकलित 'श्रीदुर्गासप्तशती' में भी भगवती स्वयं कहती हैं-

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्।

दुगासप्तशती, अध्याय 11/49

मां भगवती क्षीर भवानी की महिमा अपरम्पार हैं। हम सब पर उनकी कृपा बनी रहे इसी शुभाकांक्षा के साथ यह लेखनी विराम लेती है।

❑❑❑

Mā Kheer Bhawani Temple in Delhi

A Little Labour of Love for Mā

Kumar Tiku (from Kabul)

We belong to the army of the displaced. The world has seen too many of us. Those that are hopelessly clutching to the straws of our fast-receding identity as sons, daughters and proud inheritors of their antiquity. That is, when they are not busy hanging on the their dear lives, trying to keep at bay the recurring aftershocks of displacement and dispossession.

Our name, though, is not imporant. In us lives a part of you that is constantly assailed by questions of how to reclaim my inner peace and quietude by reclaiming the *Sanatan* way of life that was mine. And bequeathing it to my progeny for whom the threat of cultural obliteration is as real as that of climate change.

We are what you know in the current stock-in-trade of globospeak as 'migrant' Kashmiris. By definition, we are those who left our homes under conditions of extreme duress, in the hope perhaps, that the dark clouds of extremist madness would lift, sooner rather than later. In other words, we were part of that chronically non-violent, hopelessly peace-loving and utterly unprepared army of an antique and original ethnicity, that felt forced to abandon home and hearth, twenty years to a day. To defy certain outrage and death at the hands of a frenzied, possessed creed that would settle for nothing short of complete capitulation to a new, violent mutant of Islam.

No matter where we live in India and outside, as a community, we live by the hope that one day we have to reclaim the land that rightfully belongs to us. That though the wheels of justice turn ever so slowly, turn they do. So, to all those happless thousands who crossed the wailing Pir Panjal in the dark winter of 1990 and for seasons before and thereafter until the valley was cleansed dry of our presence, we say, for as long as there is hope, there is justice. For Kashmir to survive, the militant obscurantists of teh world have to give way. For, what is *kashmiriyat* if not our aeons-old ethos and culture.

Meanwhile, it would seem that our state of perpetual limbo has become a *defacto* state of being. Slowy, yet inexorably, we have been witness to colossal loss of identity as legitimate children of a pristine land whose antiquity is rivaled only by its virgin, natural splendour. Every day spent in exile, we confront questions of self-esteem and identity and how to preserve these.

After years of waging a grim struggle for survival in Delhi and many other parts of India, one of our illustrious community members has taken a small step towards helping revive our collective interest in some of the more sublime authentic landmarks of culture and religion in Kashmir.

To tell you the truth, Shri Kuldeep Dhar is not the deeply religious sort. Circumstances and co-incidences do play a part in our lives. In the month of August 2008, he took his wife and two children for a "return-to-the-roots" journeyof sorts to Kashmir. Accompanying the family on the trip was a holy man Swamiji as we call him of the neighbourhood Sai Baba temple where Kuldeep lives in

Patpat Ganj. Willy-nilly, it turned out to be a pilgrimage of sorts.

Although they visited many spiritual landmarks during the trip, it was not until they reached the pristine and blaming precincts of Mata Kheer Bhawani Mandir that Pummy, Kuldeep's lovely wife, was overcome with emotions of wistful nostalgia. Misty-eyed, she almost swooned while experiencing the pain of being kept away from what unarguably must be one of the most peace-filled pleaces in that land that abounds in positive energy.

That evening, as Kuldeep told me, he made a solemn promise to his wife that "I will do my best to let her and other fellow community members have a darshan of the Mata in Delhi". The rest was not so difficult. With a willing Swamiji at hand, finding a place of residence for Ma Bhawani became easily possible.

Swamiji's generosity provided the initial spur to start giving the idea of the Kheer Bhawani temple in Delhi a practical shape. Without any hesitation, he made the space for our dream temple available inside the Siddheshwar Mahadev Sai Temple in Patpat Ganj that draws thousands of devotees to the lotus feet of Sai Baba on a daily basis. Thanks to Swamiji's support those devotees now can also pay their obeisance at the temple of Ma Bhawani. Swamijis's consistant advice and blessings have been a source of guidance when we found ourselves bereft and adrift, not knowing where to start.

That fact that the temple got done is a source of unalloyed joy for me. As anyone who has gone about, rather bravely, implementing a project that he knows little about will testify, it is not an easy undertaking. Experience and resources, both human and financial, are never nearly

enough and by the time you are in the middle of the project, you are seized with this sinking feeling of being in the middle of the river, not sure if you will ever make it to the other shore.

That explains why when you will come pay a visit to the temple and abode of Kheer Bhawani in Delhi, you will be struck by how much the Dhar family was able to get right even as we started as self-professed novices in the business of making a temple that benefits the grandeur of M Kheer Bhawani of Tulmul (Kashmir).

It is a labour of love. One that has consumed, as you can well imagine, all the family's personal time and resoruces over the last two years. The image for the idol is a very Kashmiri replica of M Kheer Bhawani—complete in traditional *feran* and finery—created by noted Kashmiri artist Vir Munshi some years back. The community remains eternally thankful to Vir for allowing to carve a marble idol from his image.

You can take a Kashmiri out of Kashmir, not so Kashmir out the Kashmiri. So, on the eastern fringe of Delhi, across the Yamuna, I have helped build a modest temple to Ma Kheer Bhawani. The temple was opened for darshan and prayers from Jyeshtha Ashtami. Come, pay a visit. It might just fill you with some nostalgia. But do not let tears drop. Let us save them for the re-union with our land, whenever that happens. Hope rests eternal! There we go.

For Further dialogue and information get in touch with

kuldeepdhar66@yahoo.co.in

9313786246

❑❑❑



॥ महाराज्ञीस्तोत्रम् ॥

ॐ या द्वादशार्कपरिमण्डितमूर्तिरेका सिंहासनस्थितिमतीमुरगैर्वृतां च ।
देवीमनक्षगतिमीश्वरतां प्रपन्नां तां नौमि भर्गवपुषीं परमार्थराज्ञीम् ॥1॥
यत्पादपङ्कजतलेऽमरमूर्धमौलिन्यस्तेन्द्रनीलमणिसन्ततयः पतन्ति ।
किञ्जल्कपानरतमुग्धमधुव्रतत्वं राज्ञी सदा भगवती जननीव नोऽव्यात् ॥2॥
द्वारं यदीयचरणाम्बुजयुग्मनिर्यद्रेणुस्मृतिर्विवृतमस्ति महोदयानाम् ।
अम्बाधिकप्रणयपूरितचित्तवृत्ती राज्ञी शुभं वितनुयान्मम सेवकस्य ॥3॥
दम्भं विहाय भवदङ्घ्रिनतिं तनोति यो राज्ञि! देवि न विमुञ्चति मुक्तकान्तां ।
तं रूपहीनमपि काममिवाधिगम्य तां त्वां नतोस्म्यऽशरणो भवभारखिन्नः ॥4॥
शान्तिं निनाय दशकन्धरामुग्ररूपं यत्पादसद्दशनखाग्रलुठत्किरीटः ।
रामो दशेन्द्रियनिवृत्तिविधानदक्षो राज्ञीं नतोस्म्यऽशरणो जगदम्बिकां ताम् ॥5॥
अर्कप्रभा प्रबलमोहतमःप्रशान्तौ चन्द्रद्युतिर्भवभयद्विपदन्तभंङ्गे ।
याऽग्नेः शिखा दुरितदारुणदारुदाहे राज्ञीमनन्यशरणः प्रणमाम्यहं ताम् ॥6॥
कस्यापि राज्ञि बहुभाग्यानिधेः स्वरूपं भावत्कमस्ति हृदि संश्रितसन्निधानम् ।
दृष्टद्विषद्धृदयपाटनकृत्यहेतुं तां त्वा नतोस्मि नतलोकसुखप्रदात्रीम् ॥7॥
पत्तिर्द्युलोकपतिवैभवमाददाति देवाधिपोऽपि ननु यत्त्यनुकारमेति ।
यत्प्रोल्लसन्नयनयोगवियोगभावाद्राज्ञींमहोपपदरम्यतरां नाममि ॥8॥
रिक्तत्वमाप्य च धनेन यदीयभक्तिचिन्तामणिं विनिदधाति हृदब्जकोशे ।
नानाविधाभिमतसिद्धिकरं मनुष्यो राज्ञीं नमामि भववारिधितारिणीं ताम् ॥9॥
मर्त्याः शचीसहचरीकुचकुड्मलाग्रस्पर्शोचितं करसरोजमवाप्नुवन्ति ।
यत्पादयो सकृदुपाहितपुष्पपूजास्तां शर्मदामनुदिनं प्रणामामि राज्ञीम् ॥10॥
डिम्बोऽपि पूर्वसुकृतामृतसिक्तचित्तो ध्यानस्थयच्चरणभक्तिसुकल्पवीरुत्।
अभ्येत्यभीष्टफलसंग्रहभाजनत्वं राज्ञी तनोतु शुभतन्तुमहर्निशं सा ॥11॥
तापः प्रयाति विलयं नरकाभिषंङ्गजातो यदर्चनसुधारससारसेकात् ।
जन्तोरबोधकृतदुष्कृतदुष्कृतभग्नमूर्ते राज्ञी रिपून्दलयतान्मम सन्ततं सा ॥12॥

मूलच्छिदाकरणकारणमङ्घ्रिपद्मयुग्मस्मृतेर्भगवति प्रभवोऽनुभावः ।
संसारपादपततेस्तव देवि यस्या भूयान्मदीयहृदयाहितसन्निधिः सा ।।13।।
तीव्रः प्रताप इह दुःसहतां प्रयाति यन्मूर्तिचिन्तननुतिप्रभवात्प्रभावात् ।
धन्यस्य करयचिदपि क्षितिपालमौले राज्ञीं दयारसनिधिं प्रणमाम्यहं ताम् ।।14।।
रेणुर्यदङ्घ्रिकमलप्रभावः प्रयाति प्रेतेशभृत्यनयनान्ध्यनिमित्तभःवम् ।
चित्रं स्वभक्तनयने भजतेऽञ्जनत्वं राज्ञीं समस्तरिपुनिर्दलनाय वन्दे ।।15।।
मेघत्वमीहितपयोधरवृष्टिदाने यन्मूर्तिरेति चरणौ स्मरतां स्मृतैव ।
अरमाकंवैरिनिवहं नयताद्विनाशं राज्ञी त्रिलोकजननी खलु निर्विलम्बम् ।।16।।
कामी यदीयनयनाञ्चलपूतदेहो मन्त्रं विनौषधमृते मणिमतरेण ।
क्षिप्रं हि संवननमेणदृशां करोति राज्ञी ममान्तरनुरञ्जतु वाञ्छितेन ।।17।।
सिन्धोरवाप्य तटमर्चननाम यस्या गीर्वाणदुर्लभसुधारससारमय्याः ।
योगी प्रयाति परिलङ्घ्य भवाब्धिपारं राज्ञी सदा शुभततिं प्रददातु मह्यम् ।।18।।
हालाहलं स्म गिरिशो विद्धाति हीनशक्तिं स्वकण्ठगतमङ्घ्रिनतः सुरेन्द्रः ।
यद्दपूर्नामृतभरप्रभवात्प्रसादाद्राज्ञी वितारयतु संसृतिसागरान्माम् ।।19।।
सर्पाधिपूर्भवित यद्गुणकीर्तनेषु शक्तो न वाग्दशतद्वयसंयुतोपि ।
स्वात्मीयभक्तजनवाञ्छितदानदक्षा सा सर्वशत्रुदलनं विदधातु राज्ञी ।।20।।
नश्यत्यनन्यशरणस्य नरस्य यस्या ध्यानप्रभापरिवृढोदयसङ्गमेन ।
नीहारराशिरभितो वृजिनाभिधानः सा मंगलं त्रिजगतां विद्धातु राज्ञी ।।21।।
स्थित्या स्थितिं कं यदनुग्रहस्य वाग्देवता च विदधाति गृहे मुखे च ।
मर्त्यस्य तीव्रतरभक्तिसमन्वितस्य राज्ञी ददातु शुभसन्ततिमाशु मह्यम् ।।22।।
तिर्यग्गणादऽहमवैमि विचारशून्यं तं मानवं यदभिवन्दनसौख्यलेशम् ।
स्वप्नेपि न स्पृशति जातु यदीयचित्तं राज्ञी स्वभक्तजनमङ्गलदाऽस्तु नित्यम् ।।23।।
मन्त्रं यदीयमभिवांछितदं पठित्वा मर्त्यः प्रभावसहितः स्पृहणीयतायाः ।
पात्रीभवत्यमरवारविलासिनीनां दुर्वारपापदलनं विदधातु राज्ञी ।।24।।
तीक्ष्णद्युतिः शतसहस्रतनुस्वमेत्य यत्तेजसा तुलयितुं कणमप्यऽशक्तः ।
राज्ञी तथाविधसविस्मयदुर्निरीक्ष्यतेजोन्विता जयतु मंगलकारिणी सा ।।25।।
मुक्ता भवन्त्यऽचलपूर्वस्वकर्ममेघमुक्ताः प्रलभ्य यदुपासनभक्तिशुक्तेः ।
मध्यं कदाचिदऽणवो बहुलोभ्दवान्ते कुर्याच्छुभं निरुपमं स्वजनस्य राज्ञी ।।26।।

रश्मिः सहस्रकिरणस्य करालपङ्कसंशोषणे हिमकरस्य रुचिर्विकासे ।
काव्योत्पलस्य ननु यच्चरणाब्जसेवा राज्ञीं विपक्षदमनीं प्रणमाम्यहं ताम् ।।27।।
गायतिन्त सर्वधरणीधारकन्दरासु नित्यं सुपर्वहरिणीनयनासमूहाः ।
क्षेभाय यच्चरणमद्भुतमन्तहीनं राज्ञीं स्मरामि मनसा दुरितापहत्यै ।।28।।
वृक्षा यदर्चनविधावुपयोगमीयुः पुष्पैः सुगन्धहृतभृङ्गकदम्बकैर्ये ।
नाकेऽद्य कल्पतवश्च त एव सन्ति राज्ञी वपुर्मम निषिञ्चतु भाग्यवर्षैः ।।29।।
ता निष्पतन्ति नरि तत्र खलेकपोतन्यायेन भाग्यभरभागिनि सिद्धयोऽष्टौ ।
यः सर्वदा भजति राज्ञि तवाङ्घ्रियुग्मं सा त्वं ममार्द्रकरुणा भव सुप्रसन्ना ।।30।।
चामीकरप्रकरमर्थिगणाय यस्याः प्रोद्दिश्य नाम मनुजो हि ददाति भक्तः ।
यः स प्रयाति कनकाद्रिगृहाधिपत्यं राज्ञी भवत्वखिललोकहिता सदैव ।।31।।
देवालयादपि परं पदमामनन्ति काश्मीरदेशमममलेक्षणयुग्मयुक्ताः ।
मूर्त्यन्तरान्वितयदीयपदारविन्दद्वन्द्वार्पणाभ्दवतु सा विभवाय राज्ञी ।।32।।
वीतान्यवस्तुनिवहस्पृहया कृता यत्पादाब्जयोर्जनतया भजतां प्रणामाः ।
नाशाय भाविजननप्रकरस्य[1] राज्ञी कल्याणमन्तरहितं प्रददातु मह्यम् ।।33।।
मन्यूत्कटभ्रुकुटिवक्रमवेक्ष्य यस्याः कालोऽङ्घ्रिनम्नशिरसां सहित स्वरूपम् ।
द्रष्टुं न दुःसहगिरीशविलोचनाग्निशङ कायुतो भवतु मे शुभदास्तु राज्ञी ।।34।।
नर्निर्ति रम्यकररङ्गतले नटो यत्पादाब्जनम्रशिरसः सुभटस्य खड्गः ।
संग्रामनिर्दलितशत्रुजयार्जित श्री राज्ञी करोतु मदधीनमशेषशर्म ।।35।।
क्षत्रव्रजोऽतिबलदक्षिणबाहु कोशकृष्टासिमन्दरविलोडितसंगराब्धिः ।
लक्ष्मीं परां भजति यच्चरणप्रसादाल्लक्ष्मीं जनाय भजते प्रददातु राज्ञी ।।36।।
गङ्गादितीर्थजलपूतशरीरयष्टिर्यः पूर्वजन्मनि यमान्नियमांश्च सेवे ।
भावत्कमक्तिविषयं भजते स एवं दूरीकृताखिलाभयां प्रणमामि राज्ञीम् ।।37।।
तिग्मांशुमग्निमनिलं क्षितिमम्बु चन्द्रमात्मानमभ्रमपि यत्तनुमामनन्ति ।
राज्ञीं समस्तदुरितापहतिप्रगल्भां भर्गाब्धिनिर्झरनदीं सततं स्मरामि ।।38।।
मीनध्वजो ननु बभूव यदीयदृष्टिीयूषवृष्टिमधिगम्य विलब्धजीवः ।
भूतेशभालनयनानलदग्धदेहो राज्ञीं प्रसादसुमुखीं प्रणमाम्यहं ताम् ।।39।।
श्वभ्रं परापतति दृष्कृतसारणी यद्ध्यानाचलेन्द्रपरिणद्धपुरः प्रयाणा ।

1 भवन्तीतिशेषः

राज्ञीं भजे रविजकिङ्करभीतिभङ्गदानोद्यतां हृदयसन्निहितानुकम्पाम् ॥40॥
रज्जुर्विमार्गगतभक्तकरावलम्बे यत्पादपङ्कजनतिर्जगति प्रसिद्धा ।
राज्ञीमपारतरदुष्कृतकक्ष्यभारदाहे दवानलशिखां प्रणमामि नित्यम् ॥41॥
तां हेलयैव गतिमेति यदङ्घ्रिनम्रः पत्युः पतेन्मखलिहामपि नेत्रमार्गम् ।
स्वप्ने न या कठिनपापतमोविनाशनित्योदितार्यमरुचिं प्रणमामि राज्ञीम् ॥42॥
प्राणो न कर्कशकृतान्तधतावलेपपाोरगेन्द्रकवलत्वमुपैति जन्तोः ।
यभ्दक्तितार्क्षतनुसंश्रितमानस्य राज्ञी मुदं वितनुयात्स्वजनस्य तूर्णम् ॥43॥
पङ्गुर्गृहाङ्गणगतः पवनोऽन्तरायनामा यदङ्घ्रियुगनम्रतनोर्नरस्य ।
कीनाशलोकदलनोद्यमदक्षशक्तिं राज्ञीमनन्तकरुणाब्धिमुपास्महे ताम् ॥44॥
नानाकृतिर्विलयमेति भवाभिधानो यक्षो यदङ्घ्रिनतिभास्करभानुयोगात् ।
मर्त्यस्य श्रद्धमनसः सततं स्मरामि तस्या अहं पदसरोजरजांसि राज्ञ्याः ॥45॥
ताराधिपद्युतिरनारतशोककोकसंयोगनाशनविधौ स्मृतिरस्ति यस्याः ।
पापक्षयाय निजमूर्धनि करोम्यहं तद्राज्ञीपदाम्बुजयोगोत्थिरेणुपुंजम् ॥46॥
नौर्दीर्घदुर्गतिसरस्तरणोन्मुखानां यत्पादपङ्कजयुगप्रणतिर्नराणाम् ।
कश्मीरपण्डितमनोरचितप्रतिष्ठां वाग्देवतातनुमुपैम्यहमाशु राज्ञीम् ॥47॥
मिथ्या व्ययं परितनोति धनस्य मूढो यज्ञक्रियावितरणच्छलयुक्तचेताः ।
सत्यां यदङ्घ्रिविनतौ शुभकामदायां राज्ञीपदाब्जयुगलं शरणं श्रयामि ॥48॥
भागीरथीसलिलसन्ततिरुग्ररूपां तापप्रभूतिमपि यां ग्रसितुं न शक्ता ।
तां हेलया ग्लपयति स्मृतिरेव यस्या राज्ञी महादुरितभारमऽपाकरोतु ॥49॥
गण्डस्थलानि सुदृशां त्रिदिवालयानां वश्यान्यवश्यमविरेण करोति यस्याः।
पादस्मृतिर्हि निजभक्तनखक्षतानां मथ्नात्वऽमन्ददुरितानि ममाशु राज्ञी ॥50॥
वन्दारुलोकनिलयेषु करोति पद्मावाहद्विपो हि वसतिं स्थिरतां गृहीत्वा ।
यत्पादपङ्कजयुगोत्थितरेणुपुजयोगाद्धितं त्रिजगतां प्रतनोतु राज्ञी ॥51॥
पुष्णाति वैभवमपाकुरुते विपत्तिं दुःखानि हन्ति वृजिनं हरति स्मृता या।
पादाम्बुजन्मयुगलाग्रत एव राज्ञ्या आधारहीनतरदण्डनिभं पतामि ॥52॥
षड्भिर्मुखैर्गजमुखास्यकृतानुचर्यैः स्तौतीक्ष्यते च नयनप्रकरैः कुमारः ।
यां द्वादशार्कवपुषीं धृतसप्तलोकरक्षां निवारयतु भक्तभयानि राज्ञी ॥53॥
पथ्यं भिषग्भिरनधीतरचरं समस्तैर्दूरं महौषधिगणाच्च यदङ्घ्रिसेवा ।
दुर्वाररोगगुरुभारजुषां जनानां राज्ञीं विनाशयतु भक्तजनामयं सा ॥54॥
रम्भामुखं भवति नैव सुखाय जन्तोर्यद्भक्तिनाकवनिताबहुभोगभाजः ।

सुदृष्टपूर्वजननान्तरसञ्चितानि राज्ञी विचूर्णयतु मे दुरितानि नित्यम् ।।55।।
मान्यं पदं समुपयाति स वन्दिवक्त्रसत्स्थावरावनिसमर्पितकीर्तिबीजः ।
यो नित्यमर्चति तवाङ्घ्रिमनन्यकर्मा हे राज्ञि मातरऽशुभातपरिपाहि सा माम् ।।56।।
अर्थान्प्रकाशयति दीपशिखेव दीप्रा या ध्यायिनां दहति पापपतङ्गपङ्क्तिम् ।
ध्यानाभिधं किरति कज्जलजालमक्ष्णोरंहो हिनस्तु मम सा प्रणतस्य राज्ञी ।।57।।
राज्ञां शिरो लुठति पादतलाऽऽनुतानां विश्वम्भरेशशिरसां विलसत्किरीटम् ।
पादे यदीयचरणस्मरणायुषस्तां राज्ञीं भयापहृतये प्रणमामि नित्यम् ।।58।।
नो यस्मिन्पठिते मनोऽर्हति नृणामातङ्कशंकाङ्कनं गुप्तादगुप्तरामिहाशायदिशं नो दोषराशिः स्पृशेत् ।
युक्तिः सिन्धुसुतावशीकृतिविधौ हेतुर्वचोदेवताप्राप्तौ पण्डितकृष्णकेन स महाराज्ञयाः स्तवो निर्मितः ।।59।।

इति श्रीपण्डितकृष्णकविरचितः श्रीमहाराज्ञीस्तवः सम्पूर्णः।।

□□□



अथ सप्तश्लोकी दुर्गा

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥1॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥2॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥3॥

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥4॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥5॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कमान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥6॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥7॥

❑❑❑

पद्यानुवाद

सप्तश्लोकी दुर्गा

–डॉ. वीरेन्द्र शर्मा

चित्त ज्ञानियों का भी बल से, आकर्षित कर लेती हैं ।
स्वयं भगवती परमा-माया, डाल मोह में देती हैं ।।1।।
दुर्गे! हरतीं मात्र ध्यान से, सभी जनों का भय-संताप ।
स्वस्थजनों के मननयोग से, देतीं उनको शुभ मति आप ।।
सिवा आपके कौन मिटाता, भय, संकट, दारिद्र्य अपार ।
आर्द्रचित्त किसका सदैव है, करने को सबका उपकार ।।2।।
सर्वमङ्गला, स्वस्तिकारिणी, शिवा, त्रिनेत्रा, गौरी को ।
सर्व-अर्थ-साधिका, शरण्या, नारायणी! नमन तुमको ।।3।।
शरणागत दीनों-दु:खियों की, रक्षा में तत्पर तुमको ।
देवि! सभी की पीड़ा-हर्ता, नारायणी! नमन तुमको ।।4।।
सर्वस्वरूपा, सर्व-ईश्वरी सर्वशक्तिसम्पन्न तुम्हें ।
सभी भयों से हमें बचाओं, दुर्गादेवी! नमन तुम्हें ।।5।।
कर देती हो रोग नष्ट सब, तुम प्रसन्न हो जाने पर ।
नष्ट कामनाएँ वांछित सब, रुष्ट तुम्हारे होने पर।।
शरण तुम्हारी लिए जनों को, संकट नहीं सताते हैं।
तुम पर आश्रित हुए जनों की, शरण दूसरे आते हैं। ।।6।।
त्रिभुवन की सब बाधाओं का, सर्वेश्वरि! तुम शमन करो।
शत्रु हमारे दैत्यों का भी, इसी भाँति तुम दमन करो ।।7।।

❑❑❑

अनुवादक डॉ. वीरेन्द्र शर्मा (पूर्व राजदूत) अक्षर गीता, दुर्गा सप्तशती आदि अनेक आध्यात्मिक-सांस्कृतिक पुस्तकों के रचयिता हैं। संपर्क:- डी. 213, इला अपार्टमेंट, वसुंधरा एनकलेव, दिल्ली-96

देवी प्रार्थना

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेषजन्तोः,

स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां दधासि।

दारिद्र्य-दुःखभय-हारिणि का त्वत्-अन्या,

सर्वोपकार-करणाय दयार्द्रचित्ता।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मात-र्जगतोखिलस्य।

प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वं-ईश्वरी देवि चराचरस्य।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बढवः सन्ति सरलाः,

परं तेषा मध्ये विरलतरलोहं तव सुतः।

मदीयोयं त्यागः समुचितम्-इदं नोतव शिवे,

कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति।

जगत्-मातर्-मातः तव चरणसेवा न रचिता,

न वा दत्तं देवि द्रविणम्-अपि भूयस्तव मया।

तथापि त्वं स्नेहं मयि निर्-उपमं यत्-प्रकुरुषे,

कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति।

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायाणे,

सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।

या देवी सवभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तयै नमोनमः।

या देवी सवभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपोण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिाता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपोण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

— • —

आनन्दसुन्दर-पुरन्द्र-मुक्तमाल्यं,
मौलो हठेन निहितं महिषासुरस्य।
पादाम्बुजं भवतु में विजयाय मञ्जु-
मञ्जीर-शञ्जित-मनोहरम्-अम्बिकायाः
उत्तप्त-हेमरुचिरे त्रिपुरे पुनीहि,
चेत्तश्चि-रन्तनम्-अघौघवनं लुनीहि।
कारागृहे निगड-बंधन-पीड़ितस्य,
त्वत्संस्मृतौ झट्-इति मे निगडा-स्त्रुट्यन्तु।
माया कुण्डलिनी, क्रिया-मधुमती, कालीकला-मालिनी,
मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।
शक्ति शंकर-वल्लभा, त्रिनयना वाक्वादिनी भैरवी।
ह्लींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता-कुमारीत्यसि।
महाबले महोत्साहे, महाभय-विनाशिनि।
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये, शत्रूणां भयवर्धिनि,
सर्वमंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्धसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।

❑❑❑

मत्समा पातकीनास्ति पाघ्नी त्वत्समा च हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु॥

सम्पुट मन्त्र

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या

निश्शेषदेव गणशक्ति समूह मूर्त्या।

ताम्–अम्बिकां–अखिलदेव–महर्षि–पूज्यां,

भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो

ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।

सा चण्डिका खिलजगत् परिपालनाय

नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु।।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं

विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।

विश्वेशवन्द्याा भवती भवन्ति

विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः।।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद

प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।

प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं

त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-

र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः।

पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु

उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान्।।

रोगान् अशेषानपहंसि तुष्टा।

रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।
ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां श्यांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्न।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।।
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।
शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
करोतु सा नः शभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽतु ते।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।
जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।
सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।
प्रणातानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणी।
त्रैलोक्य वासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।
सर्वभूता यदा देवी सवर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।
सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय।।

□□□

गौरी स्तुतिः

ॐ लीलारब्ध स्थापित लुप्ताखिल लोकां,

लोकातीतै र्योगिभिर् अन्तर्-हृदि-मृग्याम्।

बालादित्य श्रेणि समान द्युति पुञ्जां,

गौरीम् अम्बाम् अम्बुरुहाक्षीम्-अहम् ईड्ये।

आशा पाश क्लेश विनाशं विदधानां,

पादाम्भोज ध्यान-पराणां पुरुषाणाम्।

ईशीम् ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां,

गौरीम् अम्बाम अम्बुरुहाक्षीम् अहम् ईड्ये।

प्रत्याहार ध्यान समाधिस्थितिभाजां,

नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठाां कलयन्तीम्।

सत्य ज्ञाना नन्दमयी तां तडित् आभां,

गौरीम् अम्बाम अम्बुरुहाक्षीम् अहम् ईड्ये।

चन्द्रापीडा नन्दितमन्द स्मितवक्त्रां,

चन्द्रापीडा लंकृत लोला लकभाराम्।

इन्द्रोपेन्द्रा द्यर्चित पादाम्बुजयुग्मां,

गौरीम् अम्बाम अम्बुरुहाक्षीम् अहम् ईड्ये।

नानाकारैः शक्ति कदम्बे र्भुवनानि,

व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।

कल्याणीं तां क्लपलताम् मानतिभाजां,

गौरीम् अम्बाम अम्बुरुहाक्षीम् अहम् ईड्ये।

मूलाधारातु उत्थितवन्तीं विधिरन्ध्रं,

सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम।

स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम् अभिवन्द्यां,

गौरीम् अम्बाम अम्बुरुहाक्षीम् अहम् ईड्ये।

आदि क्षान्ताम् अक्षर मूर्त्या, विलसन्तीं,

भूते भूते भूत कदम्बं प्रसवित्रीम्।

शब्द ब्रह्मानन्दमयीं ताम् अभिरामां,

गौरीम् अम्बाम अम्बुरुहाक्षीम् अहम् ईड्ये।

यस्या कुक्षौ लीनम् अखण्डं, जागत् अण्डं,

भूयो भूयः प्रादुर् अभूत् अक्षतमेव।

भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीं,

गौरीम् अम्बाम अम्बुरुहाक्षीम् अहम् ईड्ये।

यस्याम् एतत्प्रोतम अशेषं मणिमाला,

सूत्रे यत् वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।

ताम् अध्यात्म ज्ञानपदव्या गमनीयां,

गौरीम् अम्बाम अम्बुरुहाक्षीम् अहम् ईड्ये।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः,

साक्षी यस्या सर्गविधौ सहंरणे च।

विश्वत्राण क्रीडन शीलां शिवपत्नीं,

गौरीम् अम्बाम अम्बुरुहाक्षीम् अहम् ईड्ये।

प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो,

भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।

वाचां सिद्धिं सम्पत्तिम् उच्चैः शिवभक्तिं,

तस्या वश्यं पर्वत पुत्री विदधाति।

❑❑❑

इस लोकप्रिय स्तुति के साथ क्षीर भवानी माता की आरति होती है।

Managing Body

of

Siddheshwar Khir Bhawani Mandir

(Inside Sai Baba Mandir Complex) at I.P. Extension (Patparganj)
Near Hasanpur Bus Depot, Delhi-110092

Tel.: 011-20210020 • Mobile 9811897099

Patron

His Holiness
Sri Mahant Ram Sharan Giri Ji Maharaj

President

Sh Kuldeep Dhar

Vice Presidents

1. Sh Jitender Koul
2. Sh B.L. Koul (Sultan-Tathaji)
3. Sh Balraj Dhar
4. Sh Vijay Koul
5. Sh Anil Tikku
6. Sh C. L. Sapru
7. Sh K.K. Dhar
8. Sh C.N. Mujoo

General Secretary

Sh B.L. Dhar

Secretary

1. Sh Rohit Das
2. Sh Gutam Raina
3. Sh Anil Dhar
4. Sh Kumar Tikku

Members

1. Smt Basanti Dhar
2. Smt Girja Koul
3. Smt Veenaji Dhar
4. Smt Meenakshi Tikku
5. Smt Sunita Sapru
6. Sh Rajesh Gulati
7. Sh Alok Tikku
8. Sh Sujit Moza
9. Sh Ashok Kumar Dhar
10. Sh Rajeev Bhatt
11. Sh Puran Patwari

Always at the Service of Divine Mother

Pamila Dhar



जम्मू-कश्मीर के प्रमुख तीर्थस्थल



क्षीर भवानी मंदिर
तुलमुल (कश्मीर)

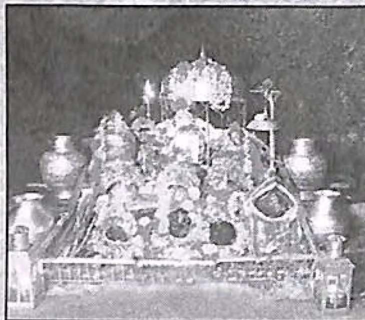




अमरनाथ
भारतमाता के भाल पर सनातन तिलक



शारिका मंदिर
(हरि पर्वत) श्रीनगर



वैष्णो देवी



शारदा मंदिर
(पाक अधिकृत) कश्मीर



ज्वाला देवी मंदिर
खिव गाँव (कश्मीर)





शंकराचार्य मंदिर
श्रीनगर (कश्मीर)

















क्षीर भवानी मंदिर, दिल्ली